हुए कहा कि, 'जैसे मेरे माथे में ठंडक हुई, ऐसा ही तेरा पेट भी ठंडा हो, उसी समय एक चमत्कार हुआ, बुढ़िया की गोद में पड़ा बच्चा जीवित हो गया। बहू को आश्चर्य हुआ और वह समझ गई की बुढ़िया साक्षात शीतला माता ही है। बहू उसके पैरों पर गिरकर क्षमा याचना करने लगी।

फिर बहू ने दोनों तलाइयों और दोनों सांडों के पापों का निवारण भी पूछा – शीतला माता बोली बेटी! तू जाते वक्त तलाइयों का पानी पी लेना तो उनके पापों का नाश हो जाएगा और सांडों के गले से पाट खोल देना, जिससे उनके पापों का नाश होगा।

बहू सबके श्राप का निवारण जानकर खुश होकर अपने बच्चे को लेकर वहाँ से घर को रवाना हुई। रास्ते में उसको दोनो सांड मिले, उनके गले से घट्टी के पाट खोल दिए जिससे उनका झगड़ा बंद हो गया। वहाँ से आगे चलने पर दोनों तलाइयाँ मिली, बहू ने उन दोनों में से पानी पी लिया, जिससे दोनों तलाइयों का पानी अमृत के समान हो गया और सभी लोग उनका पानी पीने लगे।

इस तरह बहू अपने बच्चे को लेकर घर आ गई। बच्चे को जीवित देखकर सासु बहुत ही खुश हुई।

हे शीतला माता! जैसे बहू को दर्शन दिए और संकट काटे ऐसे ही सभी के संकट दूर करना।

गणगौर की कहानी

चैत्र का महीना आया। पार्वती को भाभी के उजरणे के लिये पीहर जाना था तो महादेव जी बोले हम भी तुम्हारे साथ चलेंगे तो ईसर गौरादें नंदी को साथ लेकर निकले। महादेव जी नंदी पर बैठे और पार्वती जी पैदल चलने लगी तो लोग कहने लगे देखो आदमी तो सवारी पर बैठा है, औरत को पैदल चला रहा है। महादेव जी उतरे, पार्वती को नंदी पर बैठाया। ये देख लोग कहने लगे, देखो औरत सवारी पर बैठी है और पति पैदल चल रहा है ।ऐसा सुन पार्वती भी